सख्त प्रतिबंध: 13 मार्च, 2025, 09:20 (UTC +1) / 4:20 A.M. (EDT)

Contacts: Ole Sandmo
(+47) 98 00 18 78
ole.sandmo@uib.no

साहित्यिक सिद्धांतकार गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक को 2025 होल्बर्ग पुरस्कार विजेता नामित किया गया

(बर्गेन, नॉर्वे) – आज, होल्बर्ग पुरस्कार—जो मानविकी, सामाजिक विज्ञान, कानून या धर्मशास्त्र में उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए प्रतिवर्ष प्रदान किए जाने वाले सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों में से एक है—ने भारतीय विद्वान गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक को 2025 की पुरस्कार विजेता के रूप में नामित किया है।

स्पिवाक कोलंबिया विश्वविद्यालय में मानविकी की यूनिवर्सिटी प्रोफेसर हैं। उन्हें 6,000,000 नॉर्वेजियन क्रोनर (लगभग 540,000 अमेरिकी डॉलर) का पुरस्कार 5 जून को यूनिवर्सिटी ऑफ़ बर्गेन, नॉर्वे में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया जाएगा।

स्पिवाक को हमारे समय के सबसे प्रभावशाली वैश्विक बुद्धिजीवियों में से एक माना जाता है, और 1970 के दशक से उन्होंने साहित्यिक आलोचना और दर्शन को आकार दिया है। उन्हें तुलनात्मक साहित्य, अनुवाद, उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययन, राजनीतिक दर्शन और नारीवादी सिद्धांत में उनके क्रांतिकारी अंत:विषय अनुसंधान के लिए यह पुरस्कार दिया जा रहा है। उन्होंने नौ पुस्तकें लिखी हैं और कई अन्य पुस्तकों का संपादन और अनुवाद किया है। उनके शोध कार्यों का अनुवाद बीस से अधिक भाषाओं में किया गया है। उन्होंने पचास से अधिक देशों में पढ़ाया और व्याख्यान दिए हैं।

स्पिवाक का मुख्य नैतिक और अनुसंधान फोकस उत्तर-हेगेलियन दर्शन और 'सबऑल्टर्न' की स्थिति पर रहा है, अर्थात वे छोटे सामाजिक समूह जो इतिहास के हाशिए पर हैं, जो अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर सकते और जिनके दृष्टिकोण राष्ट्र-राज्य की सामान्यीकरण प्रक्रिया में शामिल नहीं किए जाते। विशेष रूप से, स्पिवाक ने सबऑल्टर्न महिलाओं पर ध्यान केंद्रित किया है, चाहे वह भाषायी प्रथाओं में हो या सांस्कृतिक संस्थानों में।

उन्होंने समकालीन विचार की सीमाओं को चुनौती दी है और उन्हें विस्तारित किया है—एक विद्वान, सार्वजनिक बुद्धिजीवी और कार्यकर्ता के रूप में। विश्वविद्यालय में अपने काम के अलावा, वह पिछले 40 वर्षों से भारत के सबसे गरीब क्षेत्रों में तथाकथित "अस्पृश्यों" और आदिवासियों के बीच स्व-वित्तपोषित प्राथमिक स्कूलों में शिक्षण कार्य कर रही हैं। यह उनकी लोकतांत्रिक शिक्षा के अभाव से लड़ने की प्रतिबद्धता का हिस्सा है, जो उन्होंने भारत समेत कई देशों के ग्रामीण हाशिए के समुदायों में अपनाया है। उनके अनुसंधान और सक्रियता ने अफ्रीका में गरीबी और विकास पर भी ध्यान केंद्रित किया है, विशेष रूप से वे भाषाएं जो मिशनरियों द्वारा व्यवस्थित नहीं की गई हैं।

स्पिवाक का सबसे प्रसिद्ध कार्य उनका प्रसिद्ध निबंध "क्या सबऑल्टर्न बोल सकते हैं?" (1988) है, जिसे उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययन का आधारशिला माना जाता है। इसमें उन्होंने फ्रांसीसी उच्च सिद्धांतों पर विचार करते हुए औपनिवेशिक और पूर्व-औपनिवेशिक भारत में सती प्रथा का अध्ययन किया, और यह बताया कि सबऑल्टर्न प्रतिरोध प्रमुख विचारधाराओं में मान्यता प्राप्त नहीं करता।

उनका एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान है ज़ाक देरिदा के "ऑफ़ ग्रामेटोलॉजी" का अनुवाद और उसकी आलोचनात्मक भूमिका। उन्होंने 'विघटनवाद' (Deconstruction) को अंग्रेज़ी भाषी दुनिया में लोकप्रिय बनाया। इसके अलावा, उनका ग्राम्शी और शिक्षा पर कार्य भी व्यापक रूप से प्रशंसित हुआ है।

उनकी पुस्तक "ए क्रिटीक ऑफ पोस्टकोलोनियल रीजन: टुवर्ड्स अ हिस्ट्री ऑफ द वैनिशिंग प्रेजेंट" (1999) ने उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययन में उनकी स्थिति को और मजबूत किया। इस पुस्तक में उन्होंने संस्कृति, राजनीति और इतिहास के अंतर्संबंधों का विश्लेषण किया और यह दर्शाया कि औपनिवेशिक विरासतें आज भी आधुनिक वास्तविकताओं को कैसे प्रभावित करती हैं।

"डेथ ऑफ अ डिसिप्लिन" (2003) में, उन्होंने तुलनात्मक साहित्य की पारंपरिक सीमाओं को चुनौती दी और एक नई दृष्टि प्रस्तुत की, जिसमें वैश्वीकरण के युग में भाषा और साहित्य की विविधता को संरक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

उनके अन्य प्रमुख कार्यों में "इन अदर वर्ल्ड्स" (1987), "आउटसाइड इन द टीचिंग मशीन" (1993), "एन एस्थेटिक एजुकेशन इन द एरा ऑफ ग्लोबलाइज़ेशन" (2012) और "एथिक्स एंड पॉलिटिक्स इन टैगोर, कोएट्ज़ी एंड सर्टेन सीन ऑफ टीचिंग" (2018) शामिल हैं। उनकी नवीनतम पुस्तक "स्पिवाक मूविंग" (2024) है, और वे डब्ल्यू. ई. बी. डू बोइस पर एक पुस्तक लिख रही हैं, जिसका अस्थायी शीर्षक "ग्लोबलाइजिंग एन्स्लेवमेंट: माई ब्रदर बर्गहार्ट" है।

होलबर्ग पुरस्कार विजेता ने मानविकी को एक अकादमिक क्षेत्र के रूप में समर्थन देने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि मानविकी केवल ज्ञान के उत्पादन के बजाय सीखने की प्रक्रिया को सिखाने पर जोर देती हैं। उन्होंने कहा, "केवल ज्ञान का बौद्धिक संपदा के रूप में उपयोग कर लेना ही एक लोकतांत्रिक और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण नहीं कर सकता, यदि हम सीखने की प्रक्रिया का अभ्यास नहीं करते। यह सीखना महत्वपूर्ण है कि जिसे आप जानने का प्रयास कर रहे हैं, वह केवल ज्ञान का एक विषय नहीं, बल्कि सीखने का भी एक विषय है।"

होलबर्ग समिति की अध्यक्ष, हाइके क्रिगर ने कहा, "पश्चिमी विचारधारा के मूल को एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखने के माध्यम से, स्पिवाक ने वैश्विक आधुनिकता के केंद्रों और हाशिये दोनों पर ऐसी आलोचनात्मक जांच की संभावनाएं प्रस्तुत की हैं, जो पहले अकल्पनीय थीं। उन्होंने लोगों को प्रेरित किया, सक्षम बनाया और समर्थन दिया। वे 2025 के होलबर्ग पुरस्कार की अत्यंत योग्य प्राप्तकर्ता हैं।"

"पश्चिमी विचारधारा के मूल को आलोचनात्मक विश्लेषण के विषय के रूप में लेते हुए, स्पिवाक ने ऐसी आलोचनात्मक जाँच की धाराएँ प्रेरित, सक्षम और समर्थित की हैं, जो अन्यथा अकल्पनीय होतीं—चाहे वह वैश्विक आधुनिकता के केंद्रों में हो या हाशिये पर," होलबर्ग समिति की अध्यक्ष हाइके क्रिगर कहती हैं। "वे 2025 के होलबर्ग पुरस्कार की अत्यंत योग्य प्राप्तकर्ता हैं।"

नॉर्वेजियन सरकार ने भी अपनी बधाई दी। "नॉर्वेजियन सरकार की ओर से, मैं प्रोफेसर गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक को 2025 होल्बर्ग पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई देता हूँ," शोध एवं उच्च शिक्षा मंत्री सिग्रुन आसलैंड ने कहा। "इन अनिश्चित समयों में, हमें दुनिया के सबसे प्रतिभाशाली दिमागों की विशेषज्ञता और सलाह की आवश्यकता है कि हम स्थिरता, स्थायित्व और अधिक सामान्य समझ की दिशा में मिलकर कैसे कार्य कर सकते हैं। स्पिवाक के अग्रणी अनुसंधान ने कई दशकों तक महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है, और वैश्विक दक्षिण में विकास एवं शिक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।"

"मैं सहायक प्रोफेसर डेनिएला अलाातिनोग्लू को भी निल्स क्लीम पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई देना चाहता हूँ, जो समाज में बहिष्कृत समूहों के अधिकारों और स्थिति पर उनके महत्वपूर्ण कार्य के लिए दिया गया है," मंत्री ने कहा।

पुरस्कार विजेता के बारे में

गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक 2007 से कोलंबिया विश्वविद्यालय में मानविकी की यूनिवर्सिटी प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। वह वहां इंस्टीट्यूट फॉर कम्पेरेटिव लिटरेचर एंड सोसाइटी की संस्थापक सदस्य भी हैं। उन्होंने पहले कलकत्ता विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और फिर कॉर्नेल विश्वविद्यालय से 1967 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने 20 से अधिक विश्वविद्यालयों में शिक्षण कार्य किया, जिनमें यूनिवर्सिटी ऑफ घाना, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया (इरविन), न्यू स्कूल फॉर सोशल रिसर्च, यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग, ब्राउन यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ आयोवा, नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी, और कॉर्नेल यूनिवर्सिटी शामिल हैं।

स्पिवाक ब्रिटिश अकादमी की कॉरेस्पॉन्डिंग फेलो, गुगेनहाइम फेलो, और अमेरिकन एकेडमी ऑफ आर्ट्स एंड साइंसेज तथा अमेरिकन फिलॉसॉफिकल सोसाइटी की सदस्य हैं। उन्होंने 50 से अधिक संकाय पुरस्कार प्राप्त किए हैं, और उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया है, जिनमें क्योटो पुरस्कार (कला और दर्शन, 2012), पद्म भूषण (2013), और मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन लाइफटाइम स्कॉलरली अचीवमेंट अवार्ड (2018) शामिल हैं। उन्हें दुनिया भर की 15 मानद डॉक्टरेट उपाधियाँ प्राप्त हैं।

होलबर्ग पुरस्कार के बारे में

होलबर्ग पुरस्कार की स्थापना नॉर्वेजियन संसद द्वारा 2003 में की गई थी। यह मानविकी, सामाजिक विज्ञान, कानून या धर्मशास्त्र में उत्कृष्ट शोध योगदान के लिए प्रदान किया जाने वाला सबसे बड़े वार्षिक अंतरराष्ट्रीय शोध पुरस्कारों में से एक है। यह पुरस्कार

नॉर्वेजियन सरकार द्वारा शिक्षा और अनुसंधान मंत्रालय से बर्गन विश्वविद्यालय को सीधे आवंटन के माध्यम से वित्तपोषित किया जाता है।

पूर्व पुरस्कार विजेताओं में युर्गन हेबरमास, मैनुअल कैस्टेल्स, ओनोरा ओ'नील, कैस सनस्टीन, पॉल गिलरॉय, शीला जासनॉफ, और अचिले एमबेम्बे शामिल हैं।

कोई भी व्यक्ति, जो किसी विश्वविद्यालय, अकादमी, या अन्य शोध संस्थान में अकादमिक पद पर कार्यरत है, होलबर्ग पुरस्कार के लिए उम्मीदवारों को नामांकित कर सकता है। नामांकन की अंतिम तिथि हर वर्ष 15 जून होती है।

होलबर्ग पुरस्कार के बारे में अधिक जानने के लिए यहां जाएं:
https://holbergprize.org/

प्रेस फ़ोटो, जीवनी, समिति का उद्धरण, विशेषज्ञ संपर्क जानकारी, और अन्य विवरणों के लिए यहां देखें:
https://holbergprize.org/about-us/pressroom/